तलाश

काव्य संग्रह

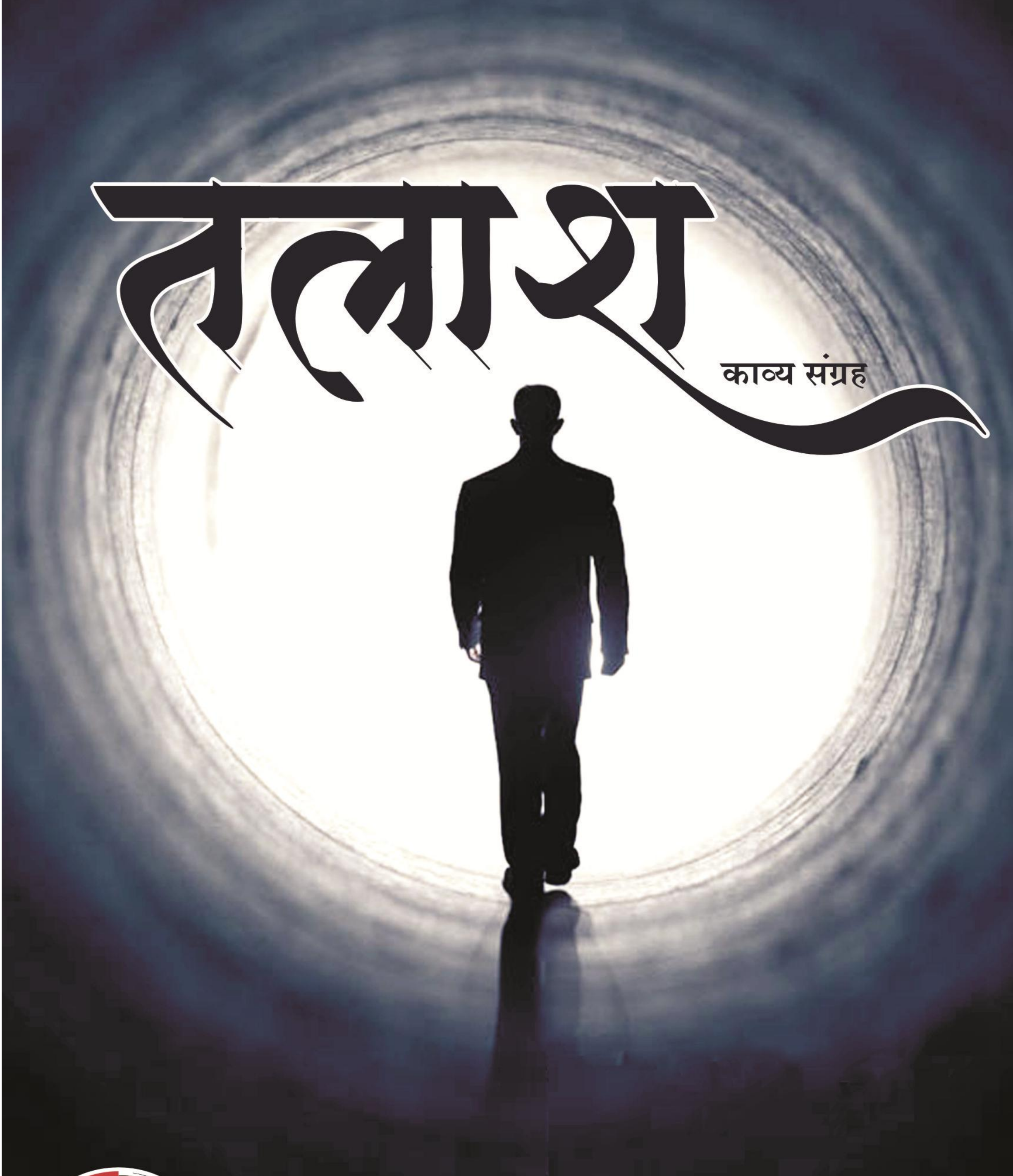

अजय पाण्डेय 'बेबस'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

तलाश

काव्य संग्रह

अजय पाण्डेय 'बेबस'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-079-7"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९

मोबाईल- ९४२४७६५२५९

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१९, **अजय पाण्डेय**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ९०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

TALASH BY AJAY PANDEY

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समर्पण

सभी रचनाओं को मैं अपने

पूज्य पिता स्व. द्वारिका नाथ पाण्डेय,

गुमला, झारखण्ड

के नाम

समर्पित

करते हुए आम जन मानस के भावनाओं में उतपन्न होने वाले भाव तथा समाज और देश के अंदर अंतर्निहित भावों को काव्य रूप में लाकर हर किसी के दिल को छूने का प्रयास किया है ।

उम्मीद है मेरी ये सभी रचनाएँ मानव हित के अंतर्गत है।।

अनुक्रमणिका

1.		
2.		
3.		
4.		
5.		
6.		
7.		
8.		
9.		
10.		
11.		
12.		
13.		
14.		
15.		
16.		
17.		
18.		
19.		
20.		
21.		
22.		

पथ महान

कर्म पथ को भाए तीन महान।
किसान-जवान और विज्ञान।।

एक लाए रोटी-कपड़ा और रहने को मकान।
हम वतनियों को रहे चैन, दूजा दे वलिदान।।

कैसे हो हमारा यह देश भारत भूमि महान।
नई-नई खोजों से एहसास कराए विज्ञान।।

स्वार्थ की नीति से होता नहीं कोई देश महान।।
जागते रहना होगा हमें भी कर श्रम का बलिदान।।

किसान-जवान-विज्ञान! जब हैं ये तीन महान।
हम क्यों पीछे चल पड़े हैं खोने देश की शान।।?

ईर्ष्या और निंदा से बाहर निकल बनें आज इंसान।
'बेवस' इंसानों की मदद कर देश को बनाएँ महान।।

'इंसानियत तेरा पथ महान'
'इंसानियत तेरा पथ महान'

सौगात

आई वेला जब बेटी की विदाई का!
मिला मुझे जीवन का एक सौगात!!

होती है बिटिया रानी कुछ ऐसी!
कराए जो कई रिश्तों से मुलाकात!!

जाने न कोई तब जात कि पात!
वेला विदाई में सब रोते एक पांत!!

बढ़ आते मदद को जो हजार में!
रिश्तों की बन चलती दिखती नई प्रपात!!

आंसुओं की बह चलती धारा में!
महकती सुहाती लगे तब अपनों की बात!!

बाप रोये! बेटी रोये! रोता दिखे बेवस पल!
ढाढस बंधाते लोग बता जीवन की नई सौगात!!

पल यह बिटिया के विदाई का!
सत्य यह जीवन से जा कराए मुलाकात!!

नव बसन्त

हर्षित बसन्त! नव बसन्त! लाई नई हरियाली है।
हर्षित मन! हर्षित लगे वेला में नई खुशियाली है।।

उजले की यह जगमग वेला! हरी-हरि पत्तियों की चुनरिया।
हरी-भरी सुनहरे चादर ओढ़े यह धरती बनती है दुल्हनिया।।

नव बसन्त! नव कलरव! पँक्षियां बनाये नित सबेरा।
मानव जीवन की नवीनता भी बनाये नवजीवन का घेरा।।

अशांत दीखते जीवन को देता सन्देश में
नव बसन्त सा खुशियों के नहीं अंत।
रहो न जीवन में कभी थक हर कर! कि
जीवन की कथा भी नव बसन्त सा अनन्त।।

मेरी दुनिया

यह मेरी दुनिया है, पर जरा हट कर।
अपनी ही भाषा में लिखता डट कर।।

उर्दू-अंग्रेजी! दोनों! दो अलग-अलग भाव हैं।
कहते तो लोग! सब एक! पर दोनों के अलग-अलग नाव है।।

छोड़कर हिन्दी कोई न चाहे हो वह हिंदुस्तानी।
मार चले हैं अपने पैर कुल्हाड़ी! कर हिंदी से बेमानी।।

राष्ट्र धर्म से उपर बहा चलें हैं स्वधर्म की धारा।
कर संस्कृति से कुठारा घात बदल रही विचारधारा।।

वक्त है आज भी! हिंदी को ही लोग जानें खेवनहार।
भाषा विदेशज से कहीं न हो जाये हिंदी का बंटा धार।।

अम्बर

नीला वो अम्बर! नीला यह समंदर है।
न जाने मानव जीवन का कैसा लहर है?

मानव ही मानव के लिए बना कहर है।
आपसी कलहों में उलझा हर शहर है।।

हर कोई के दिल में संजोया दिखे जहर है।
मिले जहाँ दो जनों में फूटे गुस्से का कहर है।।

शांत दिखे ऐसा कहाँ आज का कोई गाँव-शहर है?
मानव ही मानवीयता खोकर बना रखा डर है।।

जी रहा मानव आज मानवीय सभी रिश्ता तोड़कर है।
रोज-रोज के हत्या-बलात्कार में मानो नहीं कोई डर है।।

बेबस! वक्त देख रहा यह! रख अपनी आँख अब स्थिर है।
आएगा वह वक्त भी एक दिन! जब डर को भी होगा डर है।।

जीवन

मिला हो जो जीवन तो जी चलें! सुन्दर यह रचना है।
डर न हो मरने का! तय जहाँ एक दिन सबको मरना है।।

सुख और दुःख जीवन बगिया के दो अनमोल फूल हैं।
हंसना और रोना! इसकी डाली! पर नहीं यह शूल है।।

क्या है खोना इस जगत में कि क्या पाता जीवन भर?
अबूझ पहेली में उलझा सबका जीवन! और जीवन भर।।

धैर्य और शांति को आत्मसात कर खुशियों का ढूंढें रंग।
मधुर कलरवों में जीते जो पंछी! जीएं आज उसी ढंग।।

भरोसे का नाम ही जीवन है! भरोसे का हो ऐसा मान।
हर बसन्त में पेड़ों को नवजीवन मिलता वैसा हो भान।।

प्रेम की परिभाषा

प्रेम की अलग कोई पहचान नहीं होती।
लागी लगन जिनसे दिल का उसी में वाह वाह होती।।

ख्वाब कोई नया सपनों से लगे होता।
मिले मंजिल किसी दिल का! उसी की परवाह होती।।

प्रेम अपने में दीवानगी लिये होता।
अल्फाजों में नायक का संग दिल नायिका होती।।

प्रेम की अभिव्यक्ति! प्रेम की परिभाषा।
प्रत्युत्तर प्रेम! प्रेम की अविरल नदी बन बहती।।

कोई कृष्ण तो कोई राम के नाम में रमता।
कभी कोई दीवानगी हीर-राँझा सी होती दिखती।।

अनवरत चाहतों की हरी इस डाली में!
प्रेम ही जीवन धरोहर के लिये आसरा बनती।।

धैर्य

हे इंसान! तुम बड़ा धैर्यवान है।
बहुत सोच बनाया तब! भगवान है।।
भूल! पीछे छोड़ चलते सब दुखों को।
परिभाषित कर्म से ले आते फिर सुखों को।।

सुख-दुःख के छाँव में जीवन एक सच है।
नित होता शाम-सबेरे में अमन-चैन ढूंढ लाते।।

मौसम सा बदलते दीखते जीवन में।
हे इंसान! तुम नहीं बदले! जैसे बदलते मौसम।।
कर्म को धर्म मान! रखा जो तुम नहीं अभिमान।
'बेबस' भले वक्त हुआ! पर तुम रहे वही इंसान।।

तमन्ना

अब एक ही तमन्ना इस दिल में है।
हर हाल में हमारा देश रहे खुशहाल।।
न खोयें अपनी जान आज सैनिक।
पल रहे जो उनके घर के सब नौनिहाल।।

कब आएंगे उनके पापा! लेकर सारा प्यार।
आसरे में आँख पथराई बैठी माँ और अपनों का इंतजार।।

छोड़ चाल यह नीति और कूटनीति की।
समग्र शांति व्याप्त करने को लाये कोई नई सुनीति।।

भारत अब न देखे कोई संयोग! करे दुश्मनों पर वार।
जय का घोष करे या भरे वार का नया कोई हुँकार।।

गीदड़ों से कब तक भागे! शेरों के हिंदुस्तानी झुण्ड।
कर विच्छेदन मुंडों को! गीदड़ों को मारे झुण्ड के झुण्ड।।

बेबस नहीं हिंदुस्तानियों के सैनिकों का तेवर।
छेड़े कोई तो छोड़े नहीं! बरकरार रहे आज यह तेवर।।

किस हाल में

मन में रख धन हरने का छल! चूहे निकले दीखते अपनी चाल में।
गर जो यह रहा है तो पता नहीं आज देश है किस हाल में?

जान यह व्यथा! रोये कागा! फँसा दिखे देश आज चूहों की चाल में।
घर-घर में दीखते चूहे! सोचे अब कागा! न जाने देश है किस हाल में।।

आए भगाने कोई बनकार बिल्ली भी! तो क्या करे चूहों की भरमार में।
लाख चाहे रोकना चूहों को! कागा देख रहा धन चुराने चूहों को कगार में।।

हाल वेहाल हर घर! किसान तबाह बर्बाद होते फसलों से।
लाख लगाये पिंजरा चूहे फँसाने को! पर परेसान चूहों के हौशलों से।।

अब बारी आई तो सोचें इन बेईमान चूहों पर!
बेबस, कागा जान रहा आगे! जीवन आसान नहीं ऐसे फेरों में।।

खुदगर्ज

खुदगर्जी में तू किसी को मारा न कर।
तू इंसान है! खुदगर्जी से दूर रहा कर।।

जीने दे सबों को! जैसे जी रहे हो आज तुम।
मन उपजे विषाक्त भाव से दूर रहो तुम।।

तेरी खुदगर्जी ही एक दिन तुझे मारेगी।
तेरा पाप तेरे ही माथे चढ़कर नाचेगी।।

कहाँ किसी न कहा है कि मारेगा ओ मरेगा नहीं।
अमर सत्य जीवन-मृत्यु से जानो! कोई बचेगा नहीं।।

जैसी करनी! वैसी भरनी! कह गए हैं सब साधु और संत।
कर्म-कुकर्म पर जो मिलेगा फल वही जानो कर्म का अंत।।

'बेबस' नहीं आज ओ दुनिया जो बुरे कर्म पर चुप रहेगा।
देख बुराई आज हर सत्य पंथी मानव तुम्हे भगाएगा।।

इंसानियत का पथ देख! जो तुम्हे बचाएगा।
कर प्रेम एक दूजे से तब इंसान कहलायेगा।।

हवस

हवस की बलिवेदी पर! आज रोज एक बेटी की बलि होती है।
भूल क्यों गई! ओ माँ जगदम्बे! जिनके हाथ खड्ग होती है।।

बन कौशिकी या बन काली आज! कि शैतानों की तुम काल होती है।
कर शीश अलग धड़ से उनका जिनकी शिकार कोई बेटी होती है।।

समझ नहीं इन शैतानों को! कि बेटी क्या होती है।
हवस की बलिवेदी पर बेटी ही की बलि क्यों होती है?

हिजड़ों की बस्ती में! माँ! तुम जन्म क्यों लेती है।
छोड़ दे साथ उनका! ताकि जानें! बेटियाँ क्या होतीं हैं।।?

बन जा फिर से दुर्गा या काली! कि यह वक्त तुम्हे पुकारती है।
बन जा दुष्ट हन्ता कि, बेटियाँ जहाँ इन दुष्टों के हवस पर रोती हैं।।

ममता

आँख खुली तो सामने ममता को देखा।
माँ तुमसा सुन्दर और किसी को नहीं देखा।।

भूख लगी तो दुग्ध-अमृत का रसपान कराया।
आये नींद की तुम्हें लोरियाँ गाते पाया।।
नजर न लगे मुझे! काजल का टीका लगाते देखा।
कर न जाऊँ कपड़ा गिला! पल पल कपड़ा बदलते देखा।।

मैं जो रोता तो तुम्हारे हाथों को झूला बनते देखा।
तुम्हारे हाथों का यह झूला और कहीं झूलते नहीं देखा।।

विजली कड़के और छतरी बनते तेरा आँचल को देखा।
तेरी छाती मेरा कवच! ऐसा कवच माँ! और कहीं नहीं देखा।।

महाभारत

चार लोग क्या मिलते! पंचायत कहलाता है।
हजार मिल चलते तो महाभारत हो जाता है।।

करोड़ों हैं हम! शरहद पर फिर भी गोली चल जाता है।
बदले में आए दिन किसी सैनिक का शव! उसका घर आ जाता है।।

हम मरे हुए हैं या जिन्दा! हमारी सोच यह बतला जाता है।
किसी सैनिक का उसके घर आया शव हमें यह कह जाता है।।

हम सब एक हैं! एक नारा है जो कहने में तो भला लगता है।
देश जो झेल रहा यह संकट! बार-बार फिर क्यों आ जाता है।।

वक्त है अब भी कि एकता की नींव मजबूत करनी होगी।
हर धर्म और कौम को देश के अखंडता की बात सोचनी होगी।।

उलझन

सोचकर चलता! फिर भी उलझ जाता हूँ।
ऐ जिंदगी!
बता! क्यों भटक जाता हूँ?

है दुनिया झूठी फिर भी विश्वास कर जाता हूँ।
उलझी हुई जिंदगी में एक बोझ सा बन जाता हूँ।।

जज्बात की नहीं रही वन्दगी! जज्बाती हो जाता हूँ।
बहती जल धारा सा आज जज्बाती बन चलता हूँ।।

बनती-विगड़ती कहानी! फिर भी कहानी बन जाता हूँ।
हर पल की मिली खुशियों को दूसरों में बाँट आता हूँ।।

'बेबस' रहता रहा इस जिंदगी में भी मुस्कुरा जाता हूँ।
आए हर विपदा को हंसकर आज भी झेल जाता हूँ।।

दीवाली

धन है तो हर धनकुबेर दीवाली मना लेते हैं।
दिल से धनवान गरीब! देखकर खुश रह लेते हैं।।

लोग तो दीवाली मनाकर आपस में खुशियाँ बाँट लेते हैं।
एक दिया उनके नाम भी जले जो वतन की रक्षा में शहीद होते हैं।।

हर घर में दिवाली का दीप जले! रिश्ता आज! वह बना लेते हैं।
अमीर-गरीब के भेद-भाव को रौंद एक दूसरे में खुशियाँ बाँट लेते हैं।

हर कस्बों और शहरों में मिठाई का दुकान सजा लेते हैं।
मिठाई के हर डब्बे में अमीर-गरीब बराबर लिख देते हैं।।

मिल जाए जीवन की कोई और नई राह!वो राह ढूंढ लेते हैं।
बेबसष्न दिखे कोई अपने जीवन में! जीवन का वो राह ढूंढ लेते हैं।।

शांति

समग्र व्याप्त अशांति बीच शांति ढूंढ रहा हूँ।
काला स्याह हुआ वक्त में उजाला ढूंढ रहा हूँ।।

जातियों में बंटा समाज में जाकर आज अपनी जाति ढूंढ रहा हूँ।
हिन्दू-मुस्लिम बीच! हिन्दू में मुस्लिम! मुस्लिम में हिन्दू! ढूंढ रहा हूँ।।

मर चुकी दिख रही मानवीयता में मानवता ढूंढ रहा हूँ।
वक्त जाया न कर वक्त को सुधर जाने का वक्त ढूंढ रहा हूँ।।

विकास की तेज गति में महाविनाश को देख रहा हूँ।
सिक्के उछालकर लोगों को भाग्य पर भरोसा करते देख रहा हूँ।

सपनों में दुनिया को कत्लेआम होते देख रहा हूँ।
सच न हो जाये यह कहीं? भयावह यह सच देख रहा हूँ।।

तलाश

जरूरी था
तलाश
उसका जो
एहसास बनकर
मेरे दिलो-दिमाग में
कुंडली मार
यूँ बैठा हो
जैसे कोई साँप
अपने शिकार
को निगलने के लिये
शिकार को
पास आने का
चाह रख रहा
हो
जैसा मनोभाव से
दरिया किसी
किनारे
खड़ा था कि
छप सा कोई
आवाज
मानो किसी ने
गहरा उस दरिया
में छलांग
लगा दिया हो
और ठीक उसी
पल चार जनों को
दरिया के
पास आकर
चिल्लाते सुना
आखिर
छलांग लगाकर
गहरा इस
दरिया में
डूबकर प्राणाहुति
दे
कौन सा रोजगार

इसे मिला
जो स्वर्ण कुल में
जन्म लेकर
उच्च कोटि का
शिक्षा
फिर नौकरी प्राप्त
करने से
सरकारी नियुक्ति
कुरूतियों से
परेशान
माँ–बाप के
परवरिश पर
किया हुआ उसका वायदा
पर विफलता की
काली स्याह नीतियों
ने मरने पर मजबूर
कर दिया यह संदेश
देते हुए कि
भ्रष्टाचार की मजबूत
दीवार को न
तोड़ पाने में असमर्थ
किसी घर का
चिराग
सदा,सदा के
लिए
डूब गया।।

मजबूरी

अरे भाई
तुम देर से
आते हो
फिर
घर जाने की
जल्दी में
क्यों रहते हो
कि हर दिन तुम्हारा
यही हाल
रहता रहा है
जिससे कभी-कभी
लगता
मुझे तुम्हें
काम से
निकाल कर
दूसरा किसी को
रख लेना
जरूरी
लगता पर
तुम्हारे
घर की
माली हालत से
मजबूर
मैं''''
आगे कुछ
कहना चाह
ही रहा था
मालिक वह की
बीच में
काम पर
आता रहा
मजदूर ने
मजदूर की
मजबूरी से
अवगत कराते
हुए कहा
हुजूर क्या फर्क
मेरा में या
किसी और
मजदूर में जहाँ
भूख मिटाने
के लिए
सब मजबूर हैं
और यहाँ
आप भी
अछूता नहीं।।

कराह

बूढ़े किसी कब्र को सुनाई पड़ रही कराह से कब्र द्रवित हो उठा।
हाय! यह कैसा कब्र कराह है जिससे मन है द्रवित हो उठा।।

लगता है यह किसी नन्हें बालक के कब्र का कराह है।
असमय हुई मौत को न झेल पाने का निकलता आह है।।

कहीं? किसी पिशाच के हाथ कुचला गया दाह तो नहीं?
दुनिया भी ठीक से न देखी होगी और ईर्ष्या या डाह तो नहीं?

नहीं! नहीं! ऐसा निर्मम मानव! ऐसा कुकृत्य! वह भी किसी बालक से।
जरूर यह मेरे मन का भ्रम होगा जो सोच रहा मैं अपने मन से।।

अपनों के क्रंदन से गुंजायमान हवावों को बूढ़े कब्र ने परखा।
पास ही बन आया कब्र की कराह से अमानवीय कुकृत्य को समझा।

कब तक! कब तक इस प्रकार का क्रंदन गुंजायमान होता रहेगा?
हम बूढ़े कब्रों के पास आकर किसी नन्हें का कब्र बनता रहेगा?

बेबसी

मेरी बेबसी नहीं
कि मैं
महिला हूँ
और
महिला होने
की
बेबसी
में
अपने
को असमर्थ
किसी भी
मंजिल
से दूर
ठिकाना
ढूंढू
जिससे की
मर्द कोई
अपनी
हवस का
शिकार
समझ झपटे
तथा
समर्पित हो
मैं झुक
जाऊँ यह
कदापि नहीं
हो सकता में
मेरा दिल
कभी भी
कहीं भी
कुछ कर
गुजरने की
तम्मना लिये
चलता रहा
है
जिससे
आज इस
मुकाम को
छूते हुए
परिवार
के परवरिश
का खुद
में सक्षम
दिखती हूँ।।

व्यथा

मिल नहीं रही छुट्टी कि, शरहद पर चल रही लड़ाई है।
एक दिया मेरे नाम जला देना प्रिय जो यह दीवाली आई है।।

बदले का घाव हम भी देंगे! हम सैनिकों ने कसमें खाई है।
रोज-रोज हो दीवाली! हौशला ये जिगर में हमने भर लाई है।।

रहेगा वतन तो होगी दीवाली में हर कोई को लगे दीवाली आई है।
शान-ए तिरंगा में आज हम सबने यह कसमें अपनी बंदूकें ले खाई है।।

शरहद के उस पार खड़ा दुश्मन है जो आए न इस पार हमने बंदूक उठाई है।
'बेबस' न होना प्रिय आज तुम कि यह मातृभूमि ही हमारी असली माई है।।

पिया-परदेशी

यूँ ही कोई हमसे रोज-रोज मिला न करो।
पिया रहते परदेश यह बात सब जाना करो।।

आए जो खत मेरे नाम! मत उसे खोला करो।
रहती हैं निज बातें उनकी यह समझा करो।।

दिल रहता है वेचैन की रोज सन्देश आती नहीं! माना करो।
फौजी हैं कहकर बातों को वो टाल दिया करते हैं! जाना करो।।

इतिहास

भूले में
भी
भूल न पाए
कोई
वह इतिहास
लिखने जा
रहा
मैं–समयष
आज दुनिया
को
जात–पात
में
बाँट कर
उन्हें
उनकी जातीय
कटुता
के लाभ
से
सुखद
आपसी
कलह को
उत्सर्जित होते
देख
आनन्दित
हो रहा
यह सोचते
हुए कि
अंग्रेजों ने
मेरे लिये
यह जातिवाद
का विषैला
कटोरा
मेरे आज
और कल के
काम को
पूरा
करने में मदद
कर गया
है जिसे
लोग अब
भी समझ
चलने में
असमर्थ
लाचार
पर लड़ चलने
में
समर्थ
वाह –वाह!!

विविद्धत्ता

भाषा विविद्धत्ता
से
भाव विविद्धत्ता
ने जातीयता
को
अलग तरह से
जन्म देकर
मानो
आज समाज
को
कई वर्गों
में
विभाजित कर
एक नया
विवाद को
स्थायी रूप से
खड़ा कर
रखा है
जिससे जातीय
उन्माद
में
हत्या-बलात्कार
जैसे घृणित
कार्य
पर मर्माहत
यह देश आज
अपनी
ही अस्मिता
को
बचा चलने
में असमर्थ
एवं
राजनीति-कूटनीति
से अर्जित
हो रहे धन
को बाँट चलना

तथा जनता जनार्दनों को
मुफ्तिकरण
की राह
दिखा
सरकार ने
जनमानस की कार्य
क्षमता को
इतना घटा दिया
है
जिससे मिल
रही हानि
में
लोगों का लोगों
के बीच

काम के बहाने
बनने वाले
रिश्ते टूट कर
मानवीयता
विहीन समाज
का निर्माण
होना घातक
जिसे
नये सिरे
से सोचना
आज
जरूरी लगता
में सरकार
कुछ करे।।

अस्मिता

स्त्री-पुरुष! दो ये अस्मिता आज
अपने-अपने वजूद की तलाश में दीखते।
आगे-पीछे होने की दौड़ में शामिल हो बस,
किसी मंजिल की तलाश में दीखते।।

टूट रहा परिवार और दूर हो रहे बच्चों को
आज ये नजरअंदाज कर चलते दीखते।
रिश्तेदारी भी इनकी महत्वकांक्षी विचारों से
बहुत दूर विखर कर रह गए लगते।।

घर खर्ची को लेकर पति-पत्नी बीच होता आपसी द्वंद से
परिवार उदासी की ओर जाते दीखते।
इस कदर से आज की आधुनिकता ने परिवार को तोड़ रखा है
जिससे ऐसे हालात दीखते।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - **अजय किशोर नाथ पाण्डेय**
उर्फ अजय पाण्डेय ''बेबस''

जन्मतिथि - १२जनवरी १९६२ ई० स्थान 'गुमला'

निवास - जिला- गुमला, पोस्ट- गुमला, पिन--८३५२०७, झारखण्ड

शिक्षा - बी० ए० (प्रतिष्ठा)

विद्या - छंद-मुक्त(स्वतंत्र)

प्रकाशन- स्थानिय 'गुमला' में

सम्मान - साहित्य एवं चित्रकला 'संयुक्त' जिला स्तरीय सम्मान, राज्य स्तरीय सम्मान, राष्ट्र स्तरीय सम्मान

ईमेल - Zajaypandey babes@gmail.com

मो.नं.- ९११०१९५०१८

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-079-7

मूल्य 60/-

शब्द सुगंध